संगम-युग
[THE SANGAM AGE]

भूमिका
(INTRODUCTION)

ऊपरी रूप से देखने पर भारत स्पष्ट रूप से दो भागों में बंटा हुआ दृष्टिगोचर होता है—उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत। **विन्ध्याचल व सतपुड़ा पर्वत के दक्षिण का भाग दक्षिण भारत कहलाता था जो कि उत्तर में विन्ध्याचल पर्वत, पश्चिम में अरब महासागर, दक्षिण में हिन्दमहासागर व पूर्व में बंगाल की खाड़ी से आवृत्त है।** विन्ध्य पर्वत के उत्तर का भाग उत्तर भारत कहलाता है। दक्षिण का क्षेत्र द्रविड़ों का क्षेत्र माना जाता है।

दक्षिण में महापाषाण पृष्ठभूमि
(THE MEGALITHIC BACKGROUND IN SOUTH INDIA)

1. **महापाषाण संस्कृति के इतिहास जानने के स्रोत**—दक्षिण में महापाषाण संस्कृति के पुरातात्विक स्रोत दो स्थानों—प्रथम, आवास स्थल से और द्वितीय, कब्रों से प्राप्त हुए।

2. **दक्षिण में महापाषाण संस्कृति का उद्भव**—उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर इतिहास की धारणा है कि 100 ई. पू. के पश्चात् दक्षिण में, दक्षिण के सुदूर पठार तथा सुदूर प्रायद्वीप में महापाषाण संस्कृति का उद्भव हुआ होगा। द्वितीय सदी ई. पू. तक यह अपनी चरम पराकाष्ठा पर थी। यह संस्कृति लगभग पहली सदी ई. पू. तक रही।

3. **उत्तर भारत की तुलना में दक्षिण भारत की महापाषाण संस्कृति की मूलभूत विशेषताएं**—उत्तर भारत की तुलना में दक्षिण भारत की संस्कृति की दो मूल विशेषताएं थीं। प्रथम उत्तर भारत में जहां पाषाणयुग के बाद ताम्र, फिर लौह युग आया, परन्तु दक्षिण में पाषाणयुगीन मानव लौह से जुड़ा रहा। दूसरा, दक्षिण में इस युग में लाल व काली मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग अधिक लोकप्रिय था।

4. **धार्मिक जीवन**—पुरातात्विक स्रोतों से दक्षिण के महापाषाणयुगीन मानव के धार्मिक जीवन पर प्रकाश पड़ता है।

(अ) **देवता**—उत्खनन में त्रिशूल मिलने से इतिहासविदों का विचार है कि इस युग का मानव सम्भवतः शिव की उपासना करता होगा।

(ब) **परलोकवाद में विश्वास**—कब्रों पर जीविकोपार्जन के साधनों जैसे—बरछे, फावड़े, कुदाल, हंसिया, तलवार आदि के मिलने से ऐसा प्रतीत होता है कि ये लोग परलोकवाद में विश्वास करते थे। सम्भवतः इनका विचार रहा होगा कि इन चीजों की जरूरत परलोक में आत्मा को पड़ सकती है।

(स) **अन्तिम संस्कार**—कब्रों से अनुमान लगाया जाता है कि ये लोग मृतक का अन्तिम संस्कार उसे दफनाकर करते थे। इन कब्रों में अस्थिपंजर व जीविकोपार्जन के साधन मिले हैं। अस्थिपंजर मिट्टी के बने कलशों में भी मिले हैं जो कि पत्थर के घेरे में होता था।

5. **आर्थिक जीवन**—ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भ में महापाषाण युग का मानव कृषि योग्य सीमित भूमि का ही प्रयोग कर पाया होगा। ईसा की प्रथम सदी में इन्होंने धीरे-धीरे पहाड़ी नदी के मुहानों की उपजाऊ भूमि को कृषि योग्य बनाया। ऐसा प्रतीत होता है कि ऐसा उत्तर भारत के दक्षिण में प्रभाव के कारण हुआ होगा।

Scanned with OKEN Scanner

दक्षिण भारत के प्रमुख राज्य
(PROMINENT KINGDOMS OF SOUTH INDIA)

1. पाण्ड्य

(अ) **इतिहास जानने के स्रोत**—दक्षिण के सुदूर में स्थित मदुरा, तिनेवेल्ली व केरल तक विस्तृत क्षेत्र वाले पाण्ड्य राज्य के विषय में ऐतिहासिक जानकारी मैगस्थनीज की इण्डिया, यूनानी लेखक स्ट्रेबो के वर्णन, संगम, साहित्य, मार्कोपोलो के विवरण व पाण्ड्य तथा अशोक के अभिलेखों से होती है। उल्लेखनीय है कि ये साहित्यिक व पुरातात्विक साक्ष्य चौथी सदी ई. पू. के पश्चात् ही प्राप्त होते हैं। उससे पूर्व के इतिहास के बारे में विशेष ज्ञात नहीं है।

(ब) **राजनीतिक विवरण**—मैगस्थनीज की इण्डिका के अनुसार इस राज्य का नाम हेराक्लीज की पुत्री पण्डाइया के नाम पर पाण्ड्य पड़ा। बारहवीं सदी तक पाण्ड्य चोलों के प्रभाव में रहा, परन्तु 12वीं सदी के अन्त में राजा जटावर्मा कुल शेखर (1190 ई.-1216 ई.) ने स्वयं को स्वतन्त्र घोषित किया और उसके पुत्र मारवर्मा ने चोल राज्य के अनेक प्रदेशों को छीनकर पाण्ड्य में मिला दिया। वास्तव में, 13वीं सदी का पाण्ड्य का इतिहास अभूतपूर्व उन्नति काल था, किन्तु चौदहवीं सदी प्रारम्भ में अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति मलिक काफूर के पाण्ड्य राज्य पर आक्रमण एवं गृहयुद्ध के कारण पाण्ड्य राज्य का अन्त हो गया।

(स) **सांस्कृतिक विकास**—पाण्ड्यों के शासन काल में पाण्ड्य की सांस्कृतिक उन्नति हुई। पाण्ड्य नरेश उदार एवं विद्याप्रेमी थे। अतः तमिली साहित्य का विकास हुआ। यही नहीं, स्थापत्य व वास्तुकला का भी विकास हुआ था। व्यापार व वाणिज्य की उन्नति हुई। रोमन साम्राज्य के साथ व्यापारिक व राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित हुए।

(द) **शासन प्रबन्ध**—अभिलेखों के अध्ययन से पाण्ड्य शासन प्रणाली की अत्यन्त जानकारी मिलती है। अभिलेखों से पता चलता है कि राज्य में शान्ति स्थापित करने के लिए कानून व्यवस्था थी। ग्राम का प्रशासन ग्राम समितियां देखती थीं। ऐसा प्रतीत होता है कि ग्राम प्रशासन में राजा व उसके कर्मचारी अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करते थे।

2. चेर

(अ) **इतिहास जानने के स्रोत**—चेरों के इतिहास पर संगम साहित्य तमिल ग्रन्थ पत्तुपाट्टु एवं अशोक के शिलालेख से जानकारी प्राप्त होती है।

(ब) **राजनीतिक विवरण**—चेर राज्य केरल प्रदेश व मालाबार के तटों पर विस्तृत था। इसकी उत्पत्ति के विषय में कुछ भी कहना सम्भव नहीं है। हां, इतिहासकार इनको द्रविड़ जाति का मानते हैं। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रथम शताब्दी में यहां पेरुमार शासक था। 13वीं सदी के अन्त में चेर राज्य पाण्ड्यों के अधीन चला गया और फिर मुसलमान आक्रमण से चेर साम्राज्य सदा के लिए समाप्त हो गया।

(स) **व्यापार व वाणिज्य**—चेर साम्राज्य के विषय में जो जानकारी उपलब्ध होती है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि चेर शासन काल में व्यापार व वाणिज्य का विकास हुआ। मालाबार प्रमुख बन्दरगाह था जहां से रोम के साथ व्यापार होता था। केरल से रोम साम्राज्य को गर्म मसाले निर्यात होते थे।

(द) **धार्मिक सहिष्णुता**—चेर शासक धार्मिक सहिष्णु थे। चेर शासकों के शासनकाल में रोमन व्यापारियों ने मुजिरिम नामक स्थान पर आउत्स का मन्दिर बनाने की अनुमति प्राप्त की थी। चेर शासक रविवर्मन का यहूदी धर्म व इसाई धर्म के प्रचारकों को स्वतन्त्रता प्रदान करना इस बात का प्रमाण है कि चेर शासक धर्म सहिष्णु थे।

(2) **चोल**—चोलों के विषय में विस्तृत विवेचन अध्याय 8 में देखिए।

Scanned with OKEN Scanner

सामाजिक वर्गों का उदय
(RISE OF SOCIAL CLASSES)

दक्षिण भारत में उत्तर भारत के सदृश वर्ग-व्यवस्था एवं आश्रम व्यवस्था समाज के वर्गीकरण का आधार नहीं थी। समाज का वर्गीकरण का आधार रक्त, पेशा, धार्मिक विश्वास एवं वातावरण था। इन्हीं के आधार पर इन्हीं के अनुरूप समाज का विकास दृष्टिगोचर होता है। यह क्रम इस प्रकार था :

(अ) **प्रशासक वर्ग**—इस कड़ी में प्रथम स्थान राजा का था। समाज में उसका स्थान सर्वोच्च था। राजा का पद वंशानुगत होता था, परन्तु कभी-कभी उत्तराधिकार के लिए संघर्ष भी होता था। प्रशासन में राजा की सहायता के लिए अठारह अधिकारी होते थे—पुरोहित, सेनापति आदि।

समाज का वर्गीकरण

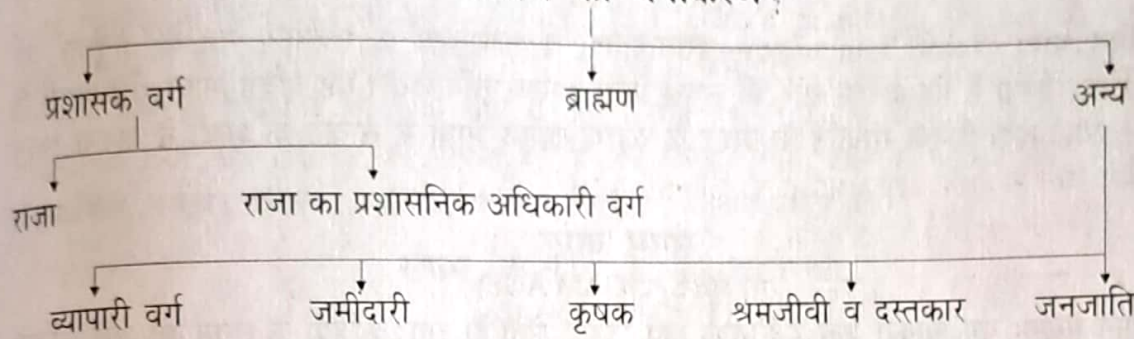

(ब) **ब्राह्मण**—समाज में द्वितीय वर्ग ब्राह्मणों का था। संगम साहित्य से स्पष्ट होता है कि बौद्धिक अध्ययन, यजन-याजन इनका मुख्य कार्य था। उल्लेखनीय है कि राजा के मन्त्रियों में ब्राह्मणों को ही स्थान मिलता था। अतः प्रशासन में इनका महत्वपूर्ण प्रभाव रहा होगा। ब्राह्मण अधिकांशतः शहर से थोड़ा हटकर एकान्त में निवास करते थे। अपने नैतिक व सदाचारी जीवन के कारण इनका समाज में अत्यधिक सम्मान था।

(स) **अन्य वर्ग**—प्रशासक ब्राह्मण वर्ग के अतिरिक्त समाज में निम्नलिखित अन्य वर्ग भी सम्मिलित थे :

(क) **व्यापारी वर्ग**—उत्तर भारत के समान व्यापारियों का एक वर्ग था जिसका मुख्य व्यवसाय, व्यापार व वाणिज्य था। व्यापार में दक्ष और धन-सम्पन्न होने के कारण समाज में इनका महत्वपूर्ण स्थान था।

(ख) **जमींदार**—इस वर्ग के पास अत्यधिक कृषि योग्य जमीन थी और यह श्रमजीवियों से उस पर कार्य करवाता था।

(ग) **कृषक**—कृषक वर्ग शारीरिक व आर्थिक दृष्टि से समुन्नत था। समाज में इन्हें अन्नपालक कहा जाता था और अत्यधिक सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। युद्ध के समय ये रणक्षेत्र में सैनिक का कार्य भी करते थे।

(घ) **श्रमजीवी व दस्तकार**—श्रमजीवियों में मजदूर वर्ग आता था जो कि जमींदारों के खेतों में कार्य करता या मजदूरी कर अपनी आजीविका चलाता था।

(ङ) **जनजातियां**—संगम साहित्य में मलवर, नाग, एनियर आदि जनजातियों का वर्णन मिलता है जो कि वन्य जीवन व्यतीत करती थीं तथा जलमार्गों पर यात्रियों को लूटा करती थीं। समाज में इन्हें असभ्य की दृष्टि से देखा जाता रहा होगा।

धर्म
(RELIGION)

उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर यह माना जाता है कि दक्षिण भारत में बलि पूजा, भूत-प्रेत पूजा विद्यमान थी, किन्तु शनैः-शनैः सभ्यता के विकास के साथ भय के कारण होने वाली इस प्रकार की मान्यताओं का स्थान प्रेम व भक्ति ने ले लिया और दक्षिण के लोग प्रागैतिहासिक युग में ही शान्तप्रिय जीवन के अभिलाषी हो गए। तमिल साहित्य से यहां प्रचलित धार्मिक स्थिति पर प्रकाश पड़ता है :

ब्राह्मण धर्म—संगम साहित्य से पता चलता है कि ब्राह्मण धर्म में इन देवी-देवताओं की पूजा होती थी—(1) मायोन, (2) शेयोन, (3) मुरुगन, (4) मरुदम, (5) कौरव, (6) शिव।

Scanned with OKEN Scanner

कुछ सम्प्रदायों ने बौद्ध धर्म व जैन धर्म के उत्थान को रोककर शैव व वैष्णव मतों का पुनः उद्धार किया।

(ब) **बौद्ध धर्म**—अशोक के अभिलेखों से पता चलता है कि अशोक ने पाण्ड्य, चोल व सातियपुत्र राज्यों में बौद्ध धर्म के प्रचारकों को भेजा। इन प्रचारकों के अथक प्रयत्न से दक्षिण में बौद्ध धर्म विकसित हुआ।

(स) **जैन धर्म**—दक्षिण में जैन धर्म का प्रसार जैन मुनि भद्रबाहु के प्रयत्नों से हुआ। मदुरा जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र था।

इस प्रकार स्पष्ट है कि दक्षिण में ब्राह्मण, जैन व बौद्ध धर्म फलते-फूलते रहे। यह उल्लेखनीय है कि तत्कालीन शासकों ने कभी धार्मिक असहिष्णुता की नीति को नहीं अपनाया।

तमिल भाषा
(TAMIL LANGUAGE)

तमिल भाषा (Tamil Language)—पुरातत्वविदों व भाषाविदों के सर्वमान्य मत के अनुसार यह स्वीकार किया जाता है कि दक्षिण क्षेत्र की सबसे प्राचीन भाषा तमिल थी। यह द्रविड़ भाषा थी। आर्यों के दक्षिण में प्रवेश तथा वैदिक संस्कृति के प्रसार के कारण तमिल भाषा में संस्कृत के शब्दों ने अपना स्थान बना लिया।

संगम काल
(THE SANGAM AGE)

संगम वस्तुतः एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ 'सभा' होता है। अतः कवियों के संगम का अर्थ कवियों की सभा है। **तमिल संगम,** तमिल विद्वानों और कवियों की एक सभा थी। इस साहित्यिक सभा की स्थापना पाण्ड्य राजाओं ने की थी। तमिल परम्परा के अनुसार पौराणिक समय से तीन संगम माने जाते हैं। अधिकांश इतिहासकारों द्वारा तीसरा संगम ईसा युग से कुछ शताब्दियों पूर्व माना जाता है।

संगम काल में जिस साहित्य की रचना हुई उसे संगम साहित्य कहा जाता है। यद्यपि संगम साहित्य का सही अनुमान लगाना कठिन है, परन्तु उस समय के साहित्य में वर्णन किए गए राजनीतिक और सामाजिक जीवन द्वारा इसका समय निर्धारित किया जा सकता है। इतिहासकार इस बात से सहमत हैं कि संगम काल का समय ईसा युग के कुछ शताब्दियों पूर्व था। **संगम काल को ईसा से कुछ शताब्दियों पूर्व मानना सही प्रतीत होता है।** संगम काल के अनेक कविता-संग्रहों और **शिलप्पदिकारम्** और **मणिमेखलय** महाकाव्यों में उस काल के समाज और व्यापार का वर्णन है। ईसा युग से कुछ शताब्दियों पूर्व ग्रीक और रोमन लेखकों की रचनाओं में भी उस परस्पर व्यापार का उल्लेख मिलता है।

संगम साहित्य
(SANGAM LITERATURE)

संगम काल में उत्कृष्ट तमिल साहित्य की रचना हुई। **पहला संगम पाण्ड्य नरेशों के संरक्षण में मदुरा में हुआ था।** दुर्भाग्यवश उस संगम का कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। **दूसरा संगम कपाटपुरम** में हुआ जिसकी अध्यक्षता ऋषि अगस्त के शिष्य तोल्काप्पियर पर ने की। तोल्काप्पियर द्वारा रचित ग्रन्थ **तोलकाप्पियम** मिलता है। यह ग्रन्थ तमिल भाषा का व्याकरण है। इस ग्रन्थ में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का वर्णन है। **तीसरा संगम** मदुरा में हुआ था। यह 1850 वर्ष तक कार्यरत रही इसमें 49 सदस्य थे तथा 49 पांड्य शासकों ने इस संरक्षण प्रदान किया था। अनुश्रुति है कि 449 कवियों ने अपनी रचनाओं को स्वीकृत कराने के लिए इसके समक्ष प्रस्तुत किया था और सभी को प्रकाश की अनुमति मिल गयी थी। तीसरे संगम के तीन संग्रह उपलब्ध हैं और वे **पत्युप्पात्तु, एतुत्थोकई और पदिनेन कीलकनक्कु।** पत्युप्पात्तु के दस काव्य हैं। एक काव्य को छोड़कर सभी काव्य राजाओं को समर्पित किए गए हैं। नक्किरकृत एक काव्य एक देवता की प्रशंसा में है। दूसरा काव्य अधिक हृदयस्पर्शी है। नक्किरर ने इन ग्रन्थों के अतिरिक्त और भी छोटे-छोटे ग्रन्थ लिखे। रुदन कन्नार के एक काव्य में 500 कविताएं हैं जिनमें कांचीपुरम् का सुन्दर वर्णन है। दूसरा काव्य एक प्रेम कथा है। इस काव्य में चोल राज्य की राजधानी पुहार का विस्तार से वर्णन है। शेष छः काव्य छः कवियों की रचनाएं हैं। उनके नाम हैं मरुथनार, कन्नियार, नत्थथनार, नप्पुथनार, कपिलर, और कैसिकनार। **एतुत्थोकई में कविताओं के आठ संग्रह हैं। इन कविताओं का बहुत ऐतिहासिक महत्व है, क्योंकि उनमें तत्कालीन समाज का विस्तार से वर्णन मिलता है।** इनमें एक कवयित्री की कविताएं भी हैं। पदिनेनकीलकनक्कु में 28 संग्रह हैं। **उनमें सबसे प्रसिद्ध तिरुवल्लुवर की रचना 'कुरल' है।**

Scanned with OKEN Scanner

इसमें दस-दस कविताओं के 113 वर्ग हैं। उसने अपने ग्रन्थ में नीति, राजधर्म, नागरिकता, शृंगार और जीवन की कला, आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला है इसलिए उसकी पुस्तक को **संक्षिप्त वेद** भी कहा जाता है।

तीसरे संगम में इन संग्रहों के अतिरिक्त **तीन बड़े महाकाव्यों** की भी रचना हुई। उनमें सबसे प्रसिद्ध **'शिलप्पादिकारम्'** है। यह महाकाव्य न केवल कथानक की दृष्टि से हृदयस्पर्शी है, परन्तु कविता, संगीत, नाटकीय तत्वों और सुन्दर वर्णनों से भी परिपूर्ण है। दूसरा महाकाव्य **'मणिमेकलै'** है। तीसरा महाकाव्य **'जीवक चिन्तामणि'** है। इसमें 3,000 मनोहर पदों में जन्म से मोक्ष तक आत्मा की यात्रा का वर्णन है।

प्रोफेसर के. ए. नीलकण्ठ शास्त्री ने लिखा है कि संगम साहित्य में आदर्शवाद के साथ वास्तविकता और उच्च कोटि की गरिमा के साथ परिश्रम और शक्ति का सम्मिश्रण था। **संगम युग तमिल साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है। इसको 'सुथरा तमिल साहित्य'** माना जाता है। इसकी विचारधारा, शैली और आदर्श बाद में हुई रचनाओं से भिन्न है। इसमें उन धर्मनिरपेक्ष लोगों का वर्णन है जो जीवन के संघर्ष में लगे हुए थे और धार्मिक कट्टरता को मानने के लिए तैयार न थे। कवियों ने जनता के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे शिक्षा के स्रोत थे और उन्होंने प्रशंसनीय और शिक्षाप्रद कार्य किया। उन्होंने सार्वभौमिक दया और उदारता की भावना का प्रदर्शन किया। संगम काल के कवियों और विचारकों में **टोलकापियर, वल्लुवर, इनलागो आदिगर, सत्तानार, कपिलार** के नाम प्रमुख हैं।

संगम कालीन शासन-व्यवस्था
(SANGAM POLITY)

संगम काल में शक्तिशाली राजा शासन करते थे और अनेक मुखिया देश के शासन कार्य में भाग लेते थे। कभी-कभी ये मुखिया स्वतन्त्र रूप से भी कार्य करते थे। **संगम काल की राज्य शासन विधि वंशानुगत राजतन्त्र (Hereditary Monarchy) थी।** साधारणतया राजा का सबसे बड़ा लड़का उसके पश्चात् राजगद्दी का अधिकारी होता था। शाही दरबार राजा की राजनीतिक क्रियाओं का केन्द्र होता था। यह एक खुला दरबार होता था जिसमें शाही वंश के सदस्य, राज्य के अधिकारी और जनता भाग ले सकती थी। सामान्यतया राज दरबार में राजा के साथ रानी भी मौजूद रहती थी। संगम काल में किसी राजा के पदच्युत होने का उदाहरण नहीं मिलता।

राजा

इस युग में राजा निरंकुश होता था। उसकी शक्ति को किसी नियम से रोका या कम नहीं किया जा सकता था। अन्त में उसकी इच्छा ही उसके निरंकुश शासन पर प्रभावशाली रोक लगा सकती थी। जनता द्वारा वंशानुगत राजतन्त्र को सबसे अच्छी राज्य शासन विधि के रूप में अपनाया गया। वे राजाओं से अच्छे नियम या शाही व्यवहार रखने की आशा करते थे। **जनता की भलाई और कानून व व्यवस्था की देखभाल करके राजा से अपने पद की गरिमा रखने की आशा की जाती थी।** छोटी और बड़ी सभी प्रकार की आपत्तियों से अपनी प्रजा की रक्षा करना राजा का कर्तव्य था। वह शैतानों को दण्ड और गुणवानों को पुरस्कार देता था। संगम काल में राजा लोग पूर्णरूप से स्वतन्त्र और बिना रोक-टोक के कार्य करते थे। अपने सलाहकारों की सलाह को मानना उनकी अपनी इच्छा पर निर्भर था। राजा में दैवी गुणों का होना माना जाता था तब उसको आदर की दृष्टि से देखा जाता था और उसकी भगवान की तरह पूजा की जाती थी।

मन्त्री

राजा के अनेक मन्त्री होते थे और उनका कार्य राजा को सलाह देना था। राजा को सही राह दिखाने का प्रयत्न करना मन्त्री का कार्य था। मन्त्री किसी जाति से नहीं चुने जाते थे। उनका राजा पर प्रभाव बहुत थोड़ा और सीधा नहीं था। राजा यदि चाहता तो उनकी उपेक्षा कर सकता था।

अन्य—संगम काल के राजा दूतों को नियुक्त करते थे वे एक राजा का दूसरे राजा के दरबार में प्रतिनिधित्व करते थे। राजा बड़ी संख्या में गुप्तचर नियुक्त करता था। भेदियों को नियुक्त करने का कार्य शान्ति और युद्ध दोनों समय में किया जाता था। **राजा के अपने राज्य में विदेशी सेवाओं के लिए गुप्तचरों का होना आवश्यक था।** वे देशी और विदेशी मनुष्यों पर जासूसी का कार्य करते थे। ग्राम की जनता अनुभवी, प्रभावशाली और बुद्धिमान मनुष्यों द्वारा शासन का कार्य स्वयं चलाती थी। ग्राम की एक छोटी सभा शासन का कार्य स्वयं चलाती थी। नगरों में आवश्यक नगरपालिका सम्बन्धी सेवाओं के लिए व्यवस्था थी। नगरों में

Scanned with OKEN Scanner

चौकीदार धनुष और बाण लेकर चोरों और डाकुओं को मारने के लिए घूमते रहते थे। नगरों में आम जनता के लिए कुएं थे।

युद्ध—संगम युग के राजाओं में परस्पर बड़ा विरोध था। वे एक-दूसरे से युद्ध करते थे। प्रत्येक राजा दूसरों से अपना पद ऊंचा करना चाहता था। आपस में ईर्ष्या की भावना विद्यमान थी। **प्रत्येक राजा का आदर्श सारी दुनिया को अपने शासन में लाना था।** उस काल में अनेक युद्ध हुए। इसके लिए राजा आवश्यक हथियार और सेना रखते थे। सेना शाही शक्ति का प्रधान आश्रय थी। तमिल सेनाओं के पास लड़ाई के आवश्यक हथियार थे।

कानून और न्याय—संगम युग में राजा में समस्त शक्तियां विद्यमान थीं और इसलिए वह मुख्य न्यायकर्ता था। वह योग्य पुरुषों की सहायता से न्याय करता था। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में न्यायालय थे। **राजधानी के न्यायालय को अवाई और ग्रामीण न्यायालय को मनरम कहते थे।** राजा स्वयं न्यायालय की अध्यक्षता करता था। दीवानी और फौजदारी दोनों प्रकार के मुकदमे होते थे, परन्तु फौजदारी मुकदमे अधिक होते थे। शाही न्यायालय में मुकदमा एक साधारण कार्य था। मुकदमे से सम्बन्धित दलों और गवाहों को शपथ दिलाई जाती थी। झूठी गवाही देने वालों की जबान काट दी जाती थी। **दण्ड बड़े कठोर थे।** चोरी करने वाले का सिर काट दिया जाता था। मिलावट को भयंकर अपराध समझा जाता था। सिर काटना, अपराध करने वाले के शरीर के अंग को काटना, यातना देना, जेल भेजना और वस्तु के रूप में जुर्माना करना जैसे दण्ड दिए जाते थे। **संगम काल की जनता समझती थी कि दण्ड देना आवश्यक है।**

राजस्व और आर्थिक व्यवस्था—संगम काल में अनेक प्रकार के कर लगाए जाते थे। राजस्व की देखभाल के लिए राजा अनेक अधिकारी नियुक्त करता था। यह अनुभव किया जाता था कि कर समान रूप से और रिवाजों के अनुसार लगाये जाएं। भूमि कर राजस्व का मुख्य स्रोत था। **इसकी दर भूमि की उपज का 1/6 भाग थी।** विशेष अवसरों पर भूमि कर में छूट दी जाती थी। राजा को करमुक्त भूमि देने का अधिकार था। आय के दूसरे साधन विदेश से आए हुए माल पर सीमा शुल्क और महसूल थे। संगम काल में रोम, मिस्र, बर्मा, मलाया और जावा से व्यापार होता था। युद्ध में लूट की सामग्री भी आय का एक स्रोत माना जाता था।

आर्थिक जीवन
(ECONOMIC LIFE)

संगम साहित्य से पता चलता है कि संगम काल में दक्षिण भारत की भूमि उपजाऊ थी तथा खूब अनाज पैदा होता था। चेर राज्य कटहल, काली मिर्च और हल्दी की खेती के लिए प्रसिद्ध था। चोल राज्य में कावेरी नदी का जल सिंचाई के काम आता था। संगम साहित्य में रागी और गन्ने के उत्पादन, गन्ने से शक्कर बनाने, फसल काटने और उनको सुखाने का उल्लेख मिलता है। **कृषिप्रधान व्यवसाय और कृषि से प्राप्त राजस्व राज्य की आय का एक मूल स्रोत था।** उस समय विदेशी और आन्तरिक व्यापार की प्रगति थी। विदेशी व्यापार संगठित था। बड़ी बन्दरगाहों वाले नगर व्यापार के केन्द्र थे। पुहार में विदेशों से माल लाने वाले जहाज माल उतारे बिना ही तट पर आ जाते थे। विदेशी व्यापार के कारण पुहार के लोग धनी थे। पुहार में ऊंचे और भव्य भवन थे। ये भवन कई मंजिलों वाले थे। इन भवनों में ऊपर तो व्यापारियों के परिवार रहते थे और नीचे की मंजिल व्यापार के लिए काम आती थी। **संगम काल में पांड्य राज्य में शालियूर और चेर राज्य में बन्दर नामक तटों की गणना बड़े बन्दरगाहों में थी।** जहाजों को संकेत देने के लिए तट पर **जल दीपों** की स्थापना की जाती थी। जहाजों की मरम्मत भी की जाती थी। बन्दरगाहों में विदेशी लोग भी रहते थे। तोण्डी, मुशिरी और पुहार में विदेशी लोग बहुत संख्या में थे। ये लोग मूल रूप में व्यापार के लिए ही रहते थे। विदेशी व्यापारी अपने बड़े जहाजों में सोना भर कर लाते थे। उसके बदले वे काली मिर्च और समुद्र और पर्वतों से प्राप्त अन्य वस्तुएं ले जाते थे।

चेरों की पुरानी राजधानी करूर का नाम **वाञ्जि** अथवा **वाञ्जिपुरम** था, जहां से रोमन सुराहियों के टुकड़े, एक रोमन ताम्र सिक्का, चिह्नों वाले काले और लाल मिट्टी के बर्तन मिले हैं। कांचीपुरम पल्लवों की राजधानी थी और प्रसिद्ध नगर था। **एरिकामेडु (पांडिचेरी) भारत और रोम के बीच एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र था।** वसवसमुद्र (मद्रास) भी एक महत्वपूर्ण बन्दरगाह था। वह पालेर नदी के मुहाने पर स्थित था।

Scanned with OKEN Scanner

पेरिप्लस ऑफ दि एरीथियन नामक ग्रन्थ में भारत और रोमन साम्राज्य के बीच व्यापारिक सम्बन्ध का उल्लेख मिलता है। इस ग्रन्थ में नौरा, तोण्डी, मुशिरी और कोट्टयम के निकट नेल्सिडा पश्चिमी तट के मुख्य बन्दरगाह बताये गये हैं। तमिल राज्यों का पश्चिम में मिस्र और अरब लोगों से और पूर्व में मलय द्वीप समूहों और चीन से व्यापारिक सम्बन्ध था। उस समय आन्तरिक व्यापार भी बहुत विकसित था। व्यापारी लोग एक स्थान से दूसरे स्थान तक कारवां बनाकर जाते थे। **बहुत कुछ आन्तरिक व्यापार विनिमय** (Barter system) **द्वारा होता था।** ऐसा पशुओं, जड़ी-बूटी, मछली का तेल, ताड़ी, गन्ना, आदि के व्यापार में होता था।

तमिल लोग बड़े मेहनती थे, परन्तु अधिकांश जनता निर्धन थी। धनी लोग या तो राजा थे या उनके साथ सम्बन्ध रखने वाले। धनी लोग अपनी आय में से कुछ भाग दान करते थे। साधारण लोग अधिकतर कृषक, शिकारी, मछुए, चरवाहे अथवा व्यापारी थे।

सामाजिक जीवन
(SOCIAL LIFE)

संगम साहित्य से तमिल लोगों के सामाजिक जीवन का पता चलता है। संगम समाज में पुजारियों अथवा ब्राह्मणों की प्रधानता न थी, परन्तु तमिल समाज में वर्ण-व्यवस्था थी और ब्राह्मण उसमें **मुखिया** थे। ब्राह्मण लोग पुजारी, विद्वान और दार्शनिक थे। तमिल ब्राह्मण अपने कर्तव्यों को अच्छी प्रकार से निभाते थे। **वे राजा के लिए पुरोहित, ज्योतिषी और न्यायाधीश के काम करते थे।** वे राजदूतों का भी काम करते थे। वे शाकाहारी थे। राजा लोग उनका आदर करते थे। उनका तमिल समाज में आदर और सम्मान था। कुछ ब्राह्मण चूड़ियां बेचते थे। कुछ संगीत में प्रवीण थे। ब्राह्मण लोग अपने आपको तमिल समाज का एक अंग समझते थे।

संगम काल में जाति-प्रथा जटिल नहीं थी। संगम समाज में चार भागों का वर्णन है और वे थे **ब्राह्मण, अरसर, वनिगर** (व्यापारी) और **वेलर** (कृषक)। क्षत्रियों, वैश्यों और शूद्रों का साहित्य में वर्णन नहीं है। **दास-प्रथा न थी।** लोगों के बेचने और खरीदने का कहीं भी वर्णन नहीं है। स्त्रियों का स्थान पुरुषों के बराबर न था। विवाहित स्त्रियां घर के काम-काज के अलावा अपने बच्चों और पतियों की देखभाल करती थीं। **वे ही सती भी होती थीं** अथवा विधवा के रूप में कठोर जीवन व्यतीत करती थीं। कुछ स्त्रियां नर्तकियां थीं। वे राजा की अंग-रक्षक भी होती थीं। **स्त्रियों को सैनिक, मन्त्री, राजदूत अथवा सलाहकार नहीं बनाया जाता था।** उनका सम्पत्ति में कोई भाग न था। स्त्रियों को आभूषण अच्छे लगते थे। दोनों स्त्री और पुरुष सोने और मोतियों के गहने पहनते थे।

साधारणतया पुरुष एक-विवाह करते थे, परन्तु राजा और सामन्त बहु-विवाह भी कर लेते थे। विवाह एक पवित्र बन्धन था और उसका जीवन में बड़ा महत्व था। विवाह साधारण होते थे और दिखावा न होता था। विवाह के समय ताली अथवा यज्ञोपवीत डाला जाता था।

तमिल लोग पौष्टिक भोजन करते थे। ब्राह्मण शाकाहारी थे, परन्तु बाकी लोग शाकाहारी और मांसाहारी दोनों थे। लोग शराब, अफीम, पान और सुपारी भी खाते थे।

धर्म
(RELIGION)

तमिल समाज में धर्म का उच्च स्थान था कुछ लोग तमिल देश के देवताओं को मानते थे और कुछ हिन्दू देवताओं की पूजा करते थे, परन्तु इसके पश्चात् भी समाज में तनाव न था। लोग अपने-अपने प्रदेश के देवताओं की पूजा करते थे। **चरवाहे तिरुमल की पूजा करते थे और उससे दूध देने वाली गायें मांगते थे।** शिकारी लोग मुरुगण की पूजा करते थे। इनके अतिरिक्त कई और देवी-देवताओं की पूजा होती थी। कृषक लोग इन्द्र देवता की पूजा करते थे क्योंकि वह वर्षा का देवता था। इन्द्र देवता का एक वार्षिक उत्सव होता था। **सूर्य और चन्द्रमा की भी पूजा होती थी। मुरुगण देवता की तमिल समाज में बहुत मान्यता थी।** संगम साहित्य में मुरुगन के मन्दिरों का बहुत स्थानों पर वर्णन है। इन्द्र, यम, वरुण और सोम चारों दिशाओं के रक्षक समझे जाते थे। संगमकालीन साहित्य में अनेक मन्दिरों का वर्णन है। इन्द्र का उत्सव पुहार के अलावा और स्थानों पर भी मनाया जाता था। मदुराई में कमन का उत्सव मनाया जाता था। कमन का मन्दिर पुहार में भी था।

संगम साहित्य में राम का नाम देवता के रूप में नहीं आता। गणेश के नाम का भी वर्णन नहीं है। शिव देवता की तमिल समाज में बड़ी मान्यता थी। विष्णु की पूजा में तुलसी और घण्टे का प्रयोग किए जाने का उल्लेख मिलता है।

Scanned with OKEN Scanner